ओम् शान्ति 10-4-15 मधुबन

प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति लाडले, सदा अव्यक्त स्थिति में रह अव्यक्त मिलन का अनुभव करने वाले, साकार सो अव्यक्त पालना के अनुभवी सर्व निमित्त टीचर्स बहिनें एवं सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें, ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - ड्रामा की बनी बनाई नूंध प्रमाण बापदादा का रथ दादी गुल्जार जी का स्वास्थ्य वार्षिक मीटिंग के समय ठीक नहीं था इसलिए मुम्बई में इलाज़ के लिए दादी जी गई थी। कुछ समय हॉस्पिटल में रहने के बाद अभी दादी जी पारला सेवाकेन्द्र पर स्वास्थ्य लाभ ले रही हैं। शरीर थोड़ा कमजोर होने कारण साकार रूप में दादी जी मधुबन नहीं पहुंच सकी, यह बापदादा की इस सीजन का लास्ट टर्न था, इसलिए शान्तिवन में 25 हजार भाई बहिनें बापदादा से मिलन के लिए पहुंचे हुए हैं। महाराष्ट्र आंध्र प्रदेश की सेवाओं का टर्न है। अत: अव्यक्त मिलन के अनुभवों के लिए 9 तारीख को रात 11 बजे से 5 बजे तक सभी ने अखण्ड योग भट्ठी की। फिर सवेरे से ही सभी विशेष अन्तर्मुखी बन अव्यक्त वतन की सैर करते दोपहर 2 बजे से ही डायमण्ड हाल में पहुंच गये।

6.00 से 8.00 बजे तक पावरफुल योग तपस्या के बीच पहले अव्यक्त मिलन की श्रेष्ठ विधि पर सूर्य भाई ने क्लास कराया। 6.30 बजे से 7.30 बजे तक सभी ने वीडियो द्वारा अव्यक्त मिलन, शक्तिशाली दृष्टि एवं वरदानों की दिव्य अनुभूति की। फिर दादी जानकी जी, दादी रतनमोहिनी जी तथा मुख्य बड़े भाई, बड़ी बहिनें स्टेज पर पधारे, पहले बापदादा को भोग लगाया गया। फिर गुल्जार दादी जी ने बापदादा को पारला में भोग स्वीकार कराया, अव्यक्त बापदादा दादी जी के तन में पधारे और मधुर महावाक्य उच्चारण किये तथा निर्वैर भाई से भी मिलन मनाया। वह महावाक्य आपके पास भेज रहे हैं, साथ में 10 तारीख सवेरे की मुरली आपके पास नहीं भेजी गई थी इसलिए यह अव्यक्त मुरली जो बापदादा के अवतरण के समय वीडियो द्वारा सबको दिखाई और सुनाई गई। वह भेज रहे हैं, सबको रिफ्रेश करना जी।

अव्यक्त बापदादा की पधरामणी तथा मधुर महावाक्य

अपने स्व स्वरूप में, भविष्य स्वरूप में और संगम का महान स्वरूप तीनों रूपों को जानते हो? और सदा तीनों ही स्वरूप एक सेकण्ड में सामने आ जाते हैं? इस समय बापदादा बच्चों की वर्तमान ब्राह्मण स्वरूप की महिमा देख रहे हैं। हर एक की महिमा बहुत महान है क्योंकि सारे कल्प में सबसे भाग्यवान स्वरूप इस समय यह संगमयुग के समय का है और संगमयुग के भाग्य को हर एक अनुभव कर रहे हैं। वाह संगमयुग का वरदानी समय वाह! ठीक है। बापदादा तो देख रहे हैं, हर एक बच्चा भी अपने भविष्य स्वरूप को जानकर हर्षित हो रहे हैं। अच्छा है।

दादी जानकी जी ने गुल्जार दादी को और पारला निवासियों को बहुत-बहुत यादप्यार और बधाई दी।

ड्रामा में जो हुआ सो अच्छा। सभी खुशी से बाबा से मिले। कुछ मिस नहीं किया ना! क्योंकि बाबा और हम बच्चे सभी साथ-साथ बैठे हैं। सभी ने बाबा से दृष्टि लिया। दादी हमेशा मुझे अपने साथ सभा में ले आती थी, आज मिस कर रही थी। आज दादी पारला में है, हम सबको बापदादा से मिलाया, सब बहुत-बहुत खुश हो गये। ड्रामा की ऐसी नॉलेज है, जो शान्त बना देती है। अभी सभी खुश हुए ना! सभी को बाबा की भासना आ गई। भासना और भावना, हमारे को जो भासना चाहिए बाबा के मिलन की, वह मिलन की भासना मिस नहीं हुई। बाबा के हम बच्चे हैं, बाबा ने आप हम सबको कहाँ बिठाया है। बाबा ने सूक्ष्म में हम सबको कितनी सकाश दी है,

बाबा की सकाश हम सबको मिल रही है। बाबा का हमारे लिए कितना प्यार है।

पारला में निर्वैर भाई ने बापदादा को गुलदस्ता दिया:- (बापदादा ने निर्वैर भाई के मस्तक पर हाथ रखा) बापदादा ने बहुत स्नेह से सभी को फल दिखाते हुए कहा कि सभी महसूस करो कि यह फल हमारे मुख में आ रहा है। बापदादा को एक-एक बच्चा प्यारा है। ऐसे नहीं पहले नम्बर में बहिनें हैं, या भाई हैं, सभी हैं। जिसकी दिल बाबा के साथ है उसके दिल में बाबा है, बाबा के दिल में वह है।

निर्वैर भाई ने सभी को याद देते हुए कहा कि आज बापदादा का विशेष मिलन दिवस है और हम सभी देश विदेश के भाई बहिनें खास सम्मुख आये हुए हैं। बापदादा हम सबकी दिल पूरी करते हैं और हम सबसे मिलने के लिए सम्मुख पहुंचे हैं। आप सबको इसकी बहुत-बहुत मुबारक हो, मुबारक हो। बापदादा के आने से हर एक ब्राह्मण बच्चे का निश्चय और परिपक्व होता है। बापदादा हमेशा संगमयुग पर अपने रथ द्वारा हमारे साथ होंगे। हम ज्ञान रत्नों से और धारणाओं से अपनी झोली भरते, विश्व महाराजा महारानी का भविष्य ताज पहनेंगे और बापदादा खुद हम सबको यह ताज पहनायेंगे।।

योगिनी बहन:- ड्रामानुसार हमें बहुत खुशी है कि हम पारला में बैठे हुए फील कर रहे हैं कि हम डायमण्ड हाल में ही बैठे हैं। हमारे साथ देश विदेश के सभी पधारे हुए भाई बहिनें, टीचर्स बहिनें हैं। आज बापदादा ने सबको बहुत प्यार भरी दृष्टि देकर वरदानों से सबकी झोली भर दी है।

हमारी नीलू बहन भी बापदादा के रथ की बहुत प्यार से सेवा कर रही हैं और हमारे निर्वैर भाई भी हमारे साथ हैं, हमें बहुत खुशी है, निर्वैर भाई भी ठीक होते जा रहे हैं।

''सन्तुष्टता की शक्ति चेहरे और चलन में धारण कर ब्रह्मा बाप समान बनो, सदा खुश रहो और खुशी बांटो''

आज चाहे सम्मुख चाहे दूर के सन्तुष्टमणि बच्चों को देख रहे हैं। हर एक बच्चा अपने सन्तुष्टता की शक्ति से चमकते हुए मुस्कराते मिलन मना रहे हैं। यह सन्तुष्टता की शक्ति सबसे महान है इसलिए इसमें सर्व प्राप्तियां हैं। सन्तुष्टता की शक्ति धारण करने वाली सन्तुष्टमणियां स्वयं को भी प्रिय, बाप को भी प्रिय, परिवार को भी प्रिय हैं क्योंकि सन्तुष्टता जहाँ है वहाँ सर्वशक्तियां सन्तुष्टता में समाई हुई हैं। सन्तुष्टता की शक्ति का वायुमण्डल चारों ओर फैलता है। सन्तुष्टमणि वाली आत्मायें कभी भी माया से हार नहीं खा सकती, माया हार खाती है। सन्तुष्टमणि आत्मायें सर्व की दिल को अपना बना सकती हैं। सन्तुष्टमणि आत्मा चाहे माया, चाहे प्रकृति के भिन्न-भिन्न हलचल को ऐसे अनुभव करती जैसे एक कार्टून को देख रहे हैं। ऐसे हर एक बच्चा अपने को सन्तुष्टता की शक्ति में सम्पन्न समझते हो? अपने से पूछो कि मैं सन्तुष्टमणि हूँ? कई बच्चे कहते हैं कभी-कभी रहते हैं, सदा नहीं लेकिन बापदादा को कभी-कभी शब्द अच्छा नहीं लगता है। बापदादा सदा हर एक बच्चे को यादप्यार देते हैं, खुशी देते हैं। तो बापदादा को यह कभी-कभी शब्द अच्छा नहीं लगता, सदा खुशनुमा। तो बापदादा यही चाहते हैं कि इस कभी-कभी शब्द को क्या परिवर्तन कर सकते हो! कभी-कभी शब्द ब्राह्मणों की डिक्शनरी में ही नहीं है, सदा। तो सभी बच्चे जो बाप के प्यारे, माया के प्रभाव से न्यारे बने हैं, क्या वह आज इस कभी-कभी शब्द को समाप्त कर सकते हैं? कर सकते हैं? क्योंकि बापदादा बहुत समय से कह रहे हैं कोई भी हलचल अचानक आनी है। उसकी तैयारी के लिए, अगर अभी भी कभी-कभी के संस्कार होंगे तो क्या सदाकाल के राज्यभाग्य के अधिकारी बन सकेंगे? ब्रह्मा बाप से सबका दिल का प्यार है। ब्रह्मा बाबा से वायदा है कि साथ हैं, साथ चलेंगे, साथ राज्य करेंगे। यह वायदा पक्का है ना! कांध हिलाओ। पक्का है? कितना पक्का! ब्रह्मा बाप ने कभी-कभी शब्द बोला! आप सबको भी सदा अमृतवेले यादप्यार दिया और सदा बाप के साथ मिलकर ज्ञान की बातें, स्नेह की बातें, उमंग-उल्हास की बातें सुनाई। अगर सभी से हाथ उठवायें कि बापदादा से प्यार है तो सभी दो दो हाथ उठायेंगे। है ना! पक्का? जब प्यार है तो प्यार वाले के एक-एक शब्द से भी प्यार होता है। ब्रह्मा बाप ने कभी शिव पिता से यह नहीं कहा कि कभी-कभी होता है। सदा फॉलो फादर किया और साथ में आपको भी कराया क्योंकि ब्रह्मा बाप का बच्चों से जिगरी प्यार है इसीलिए आपका नाम भी क्या है? ब्रह्माकुमारी, शिवकुमारी नाम नहीं है। तो ब्रह्मा बाप से प्यार अर्थात् ब्रह्मा बाप का कहना और ब्रह्माकुमार कुमारी का मानना। प्यार अर्थात् न्योछावर। तो किस पर न्योछावर होंगे? उनकी आज्ञा पर। जो बोला वह किया क्योंकि ब्रह्मा बाप के साथ शिव बाप है। अकेला नहीं। बापदादा, बापदादा कहते हो ना!

तो आज बापदादा कभी-कभी शब्द को हर बच्चे के मुख से समाप्त करने चाहते हैं। तो आप सभी बच्चे बाप के साथी हो। प्यार है ना! प्यार में तो अपने आपको न्योछावर भी कर देते हैं, यह तो सिर्फ शब्द को न्योछावर करना है क्योंकि बापदादा हर बच्चे को माला का विजयी रत्न बनाने चाहते हैं।

तो आज बापदादा विशेष सन्तुष्टता की शक्ति हर एक बच्चे में ब्रह्मा बाप समान देखने चाहते हैं। इस एक सन्तुष्टता की शक्ति में सब शक्तियां आ जायेंगी। तो आज बापदादा का विशेष वरदान है सन्तुष्टता के शक्ति भव! कुछ भी हो अपनी सन्तुष्टता को कभी नहीं छोड़ना। कई बच्चे कहते हैं, रूहरिहान करते हैं ना! तो कहते हैं सन्तुष्ट बनना सहज है, लेकिन सन्तुष्ट बनाना बहुत मुश्किल है। कोई कुछ भी करता है और आप समझते हो कि यह ठीक नहीं है फिर भी दिल में क्यों रखते हो? यह ऐसा करता, यह ऐसा करता, इसका स्वभाव ऐसा है, इसका ऐसा है...। दिल में नहीं रखो क्योंकि आपने दिल में बाप को बिठाया है। बिठाया है ना? कांध हिलाओ। बिठाया है पक्का? कि निकालते भी हो बिठाते भी हो? अगर बिठाया है तो क्या दिल में बाप के साथ बात भी रखेंगे? तो दिल में नहीं रखो।

बापदादा ने पहले भी यह युक्ति सुनाई है कि सदा ऐसी आत्मा के प्रति शुभ भावना, शुभ कामना रखकर

अपनी शुभ कामना को कार्य में लगाओ और वैसे भी देखो आप समझते हो यह अच्छा नहीं करती, तो खराब चीज़ है। तो अगर कोई आपको खराब चीज़ देवे तो आप लेंगे? तो जब खराब समझते हो तो बुद्धि में रखना, दिल में रखना तो खराब चीज़ लिया क्यों? ऐसे अपनी दिल में सदा बाप को रखते हुए बाप समान बन जायेंगे। यह तो वायदा है ना, बाप समान बनना है ना! बनना है पक्का? कि पता नहीं बनेंगे या नहीं बनेंगे? यह तो नहीं सोचते? प्यार माना फॉलो फादर। तो बापदादा अभी एक-एक बच्चे को शुभ कामना, शुभ भावना सम्पन्न आत्मा देखने चाहते हैं।

तो आज बापदादा क्या चाहता है? ब्रह्मा बाप समान बनो। फॉलो फादर क्योंकि समय की हालतें तो हलचल में आ भी रही हैं और आनी भी हैं इसलिए बापदादा हर बच्चे को यही शिक्षा देने चाहते हैं कि सदा खुश रहो और खुशी बांटो। जितनी खुशी बांटेंगे उतनी खुशी बढ़ेगी। आपको खुशनुमा देख दूसरे भी 5 मिनट के लिए तो खुश होवे। दु:खी आत्मायें अगर आपको देख करके 5 मिनट भी खुश हो जाएं तो उन्हों के लिए तो बहुत दिलपसन्द बात है। तो आज बापदादा हर एक बच्चे को विशेष सन्तुष्टता की शक्ति चलन और चेहरे से धारण कर और अन्य को भी कराने का विशेष ध्यान खिंचवा रहे हैं। अच्छा।

आज जो सभी पहली बार आये हैं वह उठो। देखो, आपको दिखाई दे रहा है। आधा क्लास पहले बारी के हैं। हाथ उठाओ। देखो, सभी के हाथ देखो। आपके नये-नये भाई बहिन कितने आपके साथी बने हैं। मुबारक हो, बहुत-बहुत मुबारक हो। अभी जैसे यहाँ तक पहुंचे हो ना! बापदादा से मिलने तक पहुंचे हो, आगे क्या करना है? फॉलो ब्रह्मा बाप। बापदादा को भी आप बच्चों को देख करके खुशी होती वाह! बच्चा आ गया! सारे परिवार को भी खुशी होती है हमारे भाई बहन आ गये, आ गये, आ गये। अभी फॉलो ब्रह्मा बाप। अच्छा।

सेवा का टर्न महाराष्ट्र, आन्ध्र और मुम्बई का है:- अच्छा। इस ज़ोन की भी संख्या बहुत है। नाम है महाराष्ट्र। तो महा होंगे ना! तो जैसे नाम है वैसे ही संख्या भी महान है। तो बापदादा देख करके खुश है। बाकी बापदादा की एक आशा और भी ज़ोन वालों के प्रति रह गई है। वह कौन सी है? हर सेन्टर यह खुशखबरी लिखे कि हमारा सेन्टर निर्विघ्न है, मिलनसार है। सब बाबा के बच्चे एक्यूरेट।

आपकी तपस्या कम नहीं है। चाहे टीचर है, चाहे स्टूडेन्ट हैं, दुनिया के हिसाब से हर एक महान आत्मायें हैं। अभी-अभी देखना आपको यह निर्विघ्न का थोड़ा सा करो तो सभी आपको जैसे आपके जड़ चित्र में शुभ भावना से देखते हैं, ऐसे आपको चैतन्य रूप में देवियों के रूप में, देवताओं के रूप में देखेंगे। बाकी सेवा सभी ने अच्छी की है। उसकी बापदादा मुबारक दे रहे हैं।

डबल विदेशी भाई बहिनें:- डबल विदेशी, डबल से डबल होते जाते हैं। बापदादा ने देखा कि स्व के ऊपर, स्वमान के ऊपर और अपने वृत्ति के ऊपर अटेन्शन अच्छा दे भी रहे हैं और दिला भी रहे हैं। यज्ञ स्नेही का, यज्ञ सहयोगी का पार्ट भी अच्छा बजा रहे हैं इसलिए बापदादा डबल विदेशियों को अनेक बार की मुबारक दे रहे हैं। डबल विदेशी मधुबन का श्रृंगार हैं और बाप का विश्व कल्याणी नाम विदेश ने सिद्ध किया है इसलिए सभी तीव्र पुरुषार्थी बनके रहना। पुरुषार्थी नहीं तीव्र पुरुषार्थी क्योंकि अभी समय है, सभी के लिए तीव्र पुरुषार्थी बनने का। पुरुषार्थ का समय अभी गया, अभी तीव्र पुरुषार्थ का समय है। तो कभी भी साधारण पुरुषार्थी नहीं बनना। सदा चेक करना, तीव्रता है? साधारण तो नहीं हो गया! वैसे अभी समय भी सूचना दे रहा है - तीव्र पुरुषार्थी बनने का। तो बापदादा खुश है, परिवार भी खुश है और सबको मुबारक दे रहे हैं। खुशी है बाप को। कितने देशों से देखो इकट्ठे हुए हैं। अच्छा।

चारों ओर के दूर बैठे दिल में समाने वाले बच्चों को बापदादा भी देख रहे हैं। सभी के प्यार की खुशबू मधुबन में पहुंच रही है। तो सभी को अभी तीव्रगति से चलना है, तीव्र पुरुषार्थ करना है, तीव्रता दुनिया के लोगों में सुख की लानी है। दु:खी को सुखी करना है। यह सुखी करने का सन्देश दे करके सभी को सुखी बनाना है, इस सेवा में तीव्रता है भी और लानी भी है। अच्छा। सबको दिल का बहुत-बहुत यादप्यार स्वीकार हो। अच्छा। ओम् शान्ति।